AGROFORESTRY
कृषिवानिकी

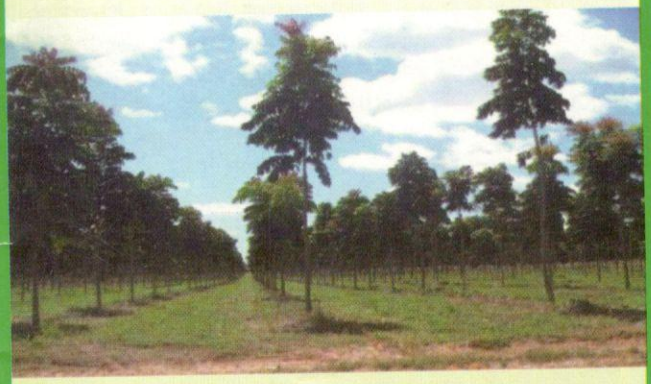

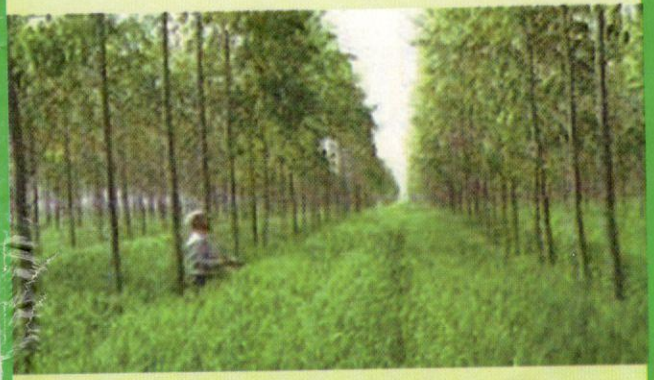

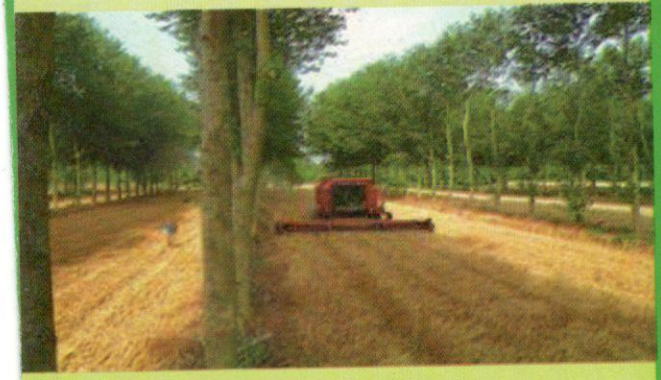

ड्राईलेण्ड एग्रोफोरेस्ट्री

राजस्थान में महोगनी की खेती-महोगनी (MAHOGANY) SWIETENIA MACROPHYLLA की खेती मुख्यत: ब्राजील, कनाडा, अमेरिका (USA) अधिकृत देश साउथ एसीयन, भारत में खेती की जाने लगी है। समृद्धि और शांति का प्रतीक ऊष्ण कटीबन्धीय जलवायु में लम्बी उम्र वाला फलदार, सदाबहार पौधा है इसका फलन ठण्डे मौसम का होता है। इसकी लम्बाई 25 से 30 मीटर ऊँचाई का पौधा है।

यह पौधा ब्राजील से है इसका 60 से 70 मीटर तक ऊँचाई जाती है भारतीय मौसम के अनुकुल 25 से 30 मीटर तक यह पौधा है। इस पौधे को लम्बी पत्तिया वाला महोगनी के नाम से जाना जाता है। इस पौधे से हमें लकड़ी मिलती है जो उच्च श्रेणी की होती है इसको HARD WOOD भी कहते है। इसकी लकड़ी DARK RED BROWN COLOUR की होती है अर्थात् ऊष्ण कटीबन्धीय TROPICAL है इस पेड़ से हमें फल भी मिलता है। जो विभिन्न बीमारियों के ईलाज के लिए काम में आता है।

यह पौधा पूरे विश्व में दक्षिणी अमेरिका से और अफ्रीका से महत्वपूर्ण रूप से लिया जाता है। किसानों को अच्छी पैदावार (COMMERCIAL AGRICULTURE) के लिए किया जाना चाहिए जिससे समृद्ध किसान अपनी खेती कर पाये।

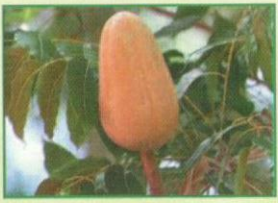
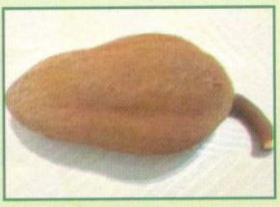

<u>फल का उपयोग व पोषण गुणवता</u> : इसका फल BROWN COLOUR का होता है जब पौधा 5 से 6 वर्ष का होता है। यह लगना शुरू होता है इसमें बीज चम्मच के आकार का मिलता हे। इसका आकार नारियल के गोले के आकार का होता है। इसके बीजों से शुगर, रक्तशुगर, हृदय धमनियों की रूकावट व कैंसर, लीवर, अस्थमा, अलजाइमर्स, स्टेमिना, शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाने आदि में काम आता है। जिसकी विश्व में सभी जगह भरपूर माँग रहती है। इसलिए इसका बीज उच्च मुल्य में बिकता है। यह बीज मानव जाति जनरल हैल्थ के लिए काम आता है।

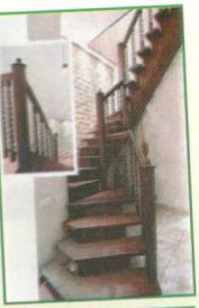

लकड़ी का उपयोग (MANOGANY WOOD) : महोगनी लकड़ी मजबूत तथा लम्बे समय तक उपयोग में ली जाने वाली लकड़ी है जिसका कलर गहरा लाल-भुरा होता है। इसकी लकड़ी पानी में भी इसका कोई नुकसान नहीं होता है तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पानी के जहाज बनाने में होता है। इसका उपयोग डिजाईनिंग पेन सभी प्रकार के वाद्ययंत्रों और उच्च स्तर के फर्नीचर बनाने में होता है। इसका उपयोग घरों के फ्लोर बनाने में होता है।

इसका लकड़ी का उपयोग मजबूत दरवाजे बनाने में होता है जो लम्बे समय तक अपनी खुबसूरती बरकरार रखते है। बर्फीले इलाकों में इसकी लकड़ी का उपयोग घर बनाने में तथा बंगलो में सजावटी अलमारियां बनाने में होता है।

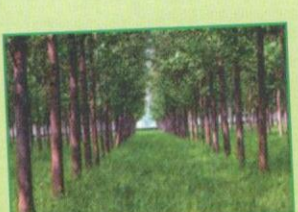

जलवायु : महोगनी की खेती के लिए सर्दियों पर्याप्त ठण्ड व गर्मियों में शुष्क मौसम उपयुक्त रहता है। सर्दियों में अच्छी ठण्डक के लिए रात्री कालीन तापमान 1.0 डिग्री सेल्सियस से 10 डिग्री सेल्सियस तक तथा अगले दिन तापमान (20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस) तक 48 डिग्री सेल्सियस तक उपयुक्त रहता है। मानसून सत्र में अधिक आद्रता होने के कारण पौधो की अधिक आवश्यकता होती है।

भूमि : महोगनी की खेती अच्छी जल निकास वाली भूमि पर होती है। चिकनी व भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों 2 फुट उंचाई व 2 फुट चौड़ाई की मेड बनाकर पौधा का रोपण करना लाभदायक होता है।

सिंचाई : महोगनी जल की कमी की स्थिति को सहन कर सकता है लेकिन लम्बे समय तक सुखे के रहने से इसकी उपज पर दुष्प्रभाव पड़ता है। विभिन्न अध्ययनों से इंगित किया गया है। महोगनी वृक्षों के लिए 0.3 से 0.5 दैनिक पैन वाष्पीकरण की आवश्यकता होती है।

गड्डे का आकार : महोगनी पौधे की रौपाई के लिए 12X12X18 इंच के आकार के गड्डे पर्याप्त रहते है। कम वर्षा वाले क्षेत्रो में गड्डो की गहराई अधिक रखनी चाहिए प्रत्येक गड्डे में 3 से 5 किलो सडी गोबर की खाद या 1 से 2 किलो वमी कमोस्ट खाद मिट्टी में मिलने बाद में पौधों की रोपाई करनी चाहिए। दीमक (उदाई) वाले क्षेत्रों में कीटनाश्कों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिप्सम की मात्रा भूमि की जाँच रिपोर्ट के अनुसार आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए।

कटाई-छटाई : महोगनी पौधे से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए इसके पौधों का सही आकार देना आवश्यक है। जिससे इसकी लम्बाई बढ़ेगी और तना का आकार बड़ा होगा इसके लिए समय पर कटाई छटाई जरूरी है। आमतौर पर पौधे को लम्बाई बढ़ाने के लिए इसकी पत्तिया काटनी चाहिए, जिससे लम्बाई में वृद्धि होती रहे व इसकी शाखाएं न आने दे जिससे तने की भरपूर लम्बाई मिल सके। इसके तने पर चढ़ने लिए मशीन आती है जो लम्बाई ज्यादा होने पर पत्तिया कटाई कर सके।

पोषक तत्व व प्रबन्धन : महोगनी पौधो की पोषक तत्वों की आवश्यकता उसकी उम्र अवस्था जलवायु एवं भूमि में पोषक तत्वों की उपलब्धता आदि पर निर्भर करती है। पोषक तत्वों के उपयोग से पूर्व विशेषज्ञ की सलाह ली जानी चाहिए समान्यत: महोगनी की खेती के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।

भूमि : महोगनी की खेती अच्छी जल निकास वाली भूमि पर होती है। चिकनी व भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों 2 फुट ऊंचाई व 2 फुट चौड़ाई की मेड बनाकर पौधा का रोपण करना लाभदायक होता है।

सिंचाई : महोगनी जल की कमी की स्थिति को सहन कर सकता है लेकिन लम्बे समय तक सुखे के रहने से इसकी उपज पर दुष्प्रभाव पड़ता है। विभिन्न अध्ययनों से इंगित किया गया है। महोगनी वृक्षों के लिए 0.3 से 0.5 दैनिक पैन वाष्पीकरण की आवश्यकता होती है।

गड्डे का आकार : महोगनी पौधे की रौपाई के लिए 12X12X18 इंच के आकार के गड्डे पर्याप्त रहते है। कम वर्षा वाले क्षेत्रो में गड्डो की गहराई अधिक रखनी चाहिए प्रत्येक गड्डे में 3 से 5 किलो सडी गोबर की खाद या 1 से 2 किलो वमी कमोस्ट खाद मिट्टी में मिलने बाद में पौधों की रोपाई करनी चाहिए। दीमक (उदाई) वाले क्षेत्रों में कीटनाश्कों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिप्सम की मात्रा भूमि की जाँच रिपोर्ट के अनुसार आधार पर निर्धारित की जानी चाहिए।

कटाई-छटाई : महोगनी पौधे से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए इसके पौधों का सही आकार देना आवश्यक है। जिससे इसकी लम्बाई बढ़ेगी और तना का आकार बड़ा होगा इसके लिए समय पर कटाई छटाई जरूरी है। आमतौर पर पौधे को लम्बाई बढ़ाने के लिए इसकी पत्तिया काटनी चाहिए, जिससे लम्बाई में वृद्धि होती रहे व इसकी शाखाएं न आने दे जिससे तने की भरपूर लम्बाई मिल सके। इसके तने पर चढ़ने लिए मशीन आती है जो लम्बाई ज्यादा होने पर पत्तिया कटाई कर सके।

पोषक तत्व व प्रबन्धन : महोगनी पौधो की पोषक तत्वों की आवश्यकता उसकी उम्र अवस्था जलवायु एवं भूमि में पोषक तत्वों की उपलब्धता आदि पर निर्भर करती है। पोषक तत्वों के उपयोग से पूर्व विशेषज्ञ की सलाह ली जानी चाहिए समान्यत: महोगनी की खेती के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।